lÁfl) rcyk oknd Loxh; mLrkn vgen tku fFkjdok d oknu e

प्रयुक्त कायदे – एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड यूनिवर्सिटी) दयालबाग़,

आगरा से संगीत में पी एच0 डी0 की उपाधि की पूर्ति हेतु

शोध–प्रबन्ध की प्रस्तावित

:ijs[kk

2018

funशिकk % 'kks/kd=h %

Ák0 uhy 'kek वैशाली
संगीत विभाग

foHkkxk/;{k % lnk; Áe[k %

Ák0 ¼Jherh½ lÒæk dekjh lRklxh Ák0 t0 d0 oek
संगीत विभाग अंग्रेजी विभाग

dyk&ldk; ¼lxhr foHkkx½]

n;kyckx ,tकेशनल bLVhV;V

¼MhEM ;fuoflVh½ n;kyckx] vkxjk

Hkfedk

भारतीय संगीत में अवनद्ध वाद्यों की श्रेणी में तबले का महत्वपूर्ण स्थान है। यह वाद्य सर्वाधिक प्रचलित, उपयोगी, उन्नत एवं लोकप्रिय ताल वाद्य है, जिसका स्वतन्त्र वादन बहु प्रचारित है साथ ही गायन, वादन एवं नृत्य संगीत की तीनों ही विधाओं में संगत हेतु यह ताल वाद्य जितना लोकप्रिय सिद्ध हुआ है उतना कोई अन्य वाद्य नहीं। इस वाद्य का प्रयोग संगीत की विधाओं को लय व ताल से परिपूर्ण कर उनमें निहित सौन्दर्य को दुगना कर देता है।यह वाद्य स्वतन्त्र वादन की दृष्टि से भी संगीत जगत में अपना अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान बनाने में पूर्ण रूप से सक्षम रहा है। इस वाद्य का स्वतन्त्र साहित्य, बोल–बन्दिशें व विशिष्ट वादन शैली है।

कला को साकार करने में कलाकार अहम भूमिका का निर्वाह करता है। कला कोई भी हो उसके परिष्कार, विकास, संवर्धन व संरक्षण के साथ ही प्रचार–प्रसार के मूल में कलाकार की महती भूमिका होती है। कलाकार ही वह धुरी है जिसके इर्द–गिर्द कला के विकास का चक्र निरन्तर प्रवाहमान रहता है एवं उत्तरोत्तर विकास के सोपानों पर चढ़ता है। अतः भारतीय संगीत की आधारशिला को दृढ़ कर उसे सम्मान जनक रूप में अस्तित्व में लाने का श्रेय कलाकारों को ही जाता है।

वर्तमान में तबला वाद्य की ख्याति अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर है। इस वाद्य की लोकप्रियता को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पहुँचाने एवं इसके साहित्य को समृद्ध करने में उच्च्य कोटि के कलाकारों का योगदान रहा है। इन कलाकारों ने कला साधना, चिन्तन एवं सृजनशीलता के माध्यम से तबला वादन हेतु विभिन्न बोल बन्दिशों की रचना कर इस वाद्य के स्वतन्त्र अस्तित्व को कायम रखने में महती भूमिका का निर्वाह किया। बोल–बन्दिशों के भिन्न–भिन्न वादन तकनीक के फलस्वरूप क्रमशः दिल्ली, अजराड़ा, लखनऊ, फर्रूखाबाद, बनारस, पंजाब घराने हुऐ। पृथक–पृथक घराने में अनेकों बन्दिशें प्रचलन में है। इन बन्दिशों का प्रयोग तबला स्वतन्त्र वादन में किया जाता है। पेशकार, कायदा, रेला, टुकड़े, गत, परन इत्यादि विस्तारक्षम एवं पूर्ण संकल्पित रचनाएँ तबला

स्वतन्त्र वादन हेतु प्रचलित हैं। तबला वाद्य वादन का जो सुसंगठित व क्रमबद्ध रूप दृष्टव्य है उसकी पृष्ठभूमि में इन उच्च कोटि के कलासाधकों का ही योगदान रहा है।

उस्ताद अहमद जान थिरकवा भारत के उन शीर्षस्थ तबला वादकों में से एक हैं जिनका नाम सांगीतिक इतिहास के पन्नों में सर्वणाक्षरों में अंकित है। आप स्वतन्त्र वादन के साथ–साथ गायन, तन्त्र वादन एवं नृत्य की संगत में भी सिद्ध हस्त थे। आपने तबला स्वतन्त्र वादन को एक नवीन दिशा प्रदान की। आप तबला वादन में दिल्ली, अजराड़ा, लखनऊ, फर्रूखाबाद घराने की रचनाओं को सौन्दर्यपूर्ण ढंग से प्रस्तुत करते थे। अर्थात् आपने समस्त वादन शैलियों को पूरी गम्भीरता और सूक्ष्मता से आत्मसात कर अपनी स्वयं की वादन शैली निर्मित कर ली थी जिसके लिये आपको तबला वादन के क्षेत्र में सर्वप्रथम पद्मभूषण की उपाधि से अलंकृत किया गया। तबला स्वतन्त्र वादन प्रस्तुत करते समय आपके वादन में **फर्शबन्दी, पेशकार, चलन, कायदा, रेला, गत कायदा, गत, टुकड़े, चक्रदार टुकड़े, परन, फरमाईशी**] dekyh pØnkj इत्यादि बन्दिशें सम्मिलित होती थी।

उस्ताद अहमद जान थिरकवा के स्वतन्त्र तबला वादन में कायदों को विशेष महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था। आपके कायदों का वादन अनूठा होता था क्योंकि उसमें विभिन्न घरानों की विशेषताएँ निहित होती थी। आपके वादन में घरानेदार कायदों का ही समावेश होता था। आपकी वादन शैली व बोल–बन्दिशों को बजाने की प्रक्रिया व तकनीक अन्य कलाकारों से भिन्न होती थी जो आपके वादन की विशेषता थी।

यद्यपि संगीत में तीनों ही विधाओं गायन, वादन, नृत्य की छटा दृष्टव्य होती है परन्तु शोधार्थिनी चूँकि अवनद्ध वाद्य वर्ग की छात्रा है एवं स्वंय तबले से जुड़ी हुई है अस्तु उ0 अहमद जान थिरकवा की वादन शैली से अत्यन्त प्रभावित रही है। फलतः आपके वादन में प्रयुक्त कायदे एवं उनमें निहित विशेषताओं के विषय में जानकारी प्राप्त करने की जिज्ञासा उत्पन्न होना स्वाभाविक ही था। अतः अपनी जिज्ञासाओं की पूर्ति हेतु शोधकर्त्री द्वारा तत् सम्बन्धी साहित्य का अध्ययन किया गया जो इस प्रकार है :–

Ø0 l0	'kk/k ÁcU/k	शोधार्थी
1-	Rkcyk oknu esa dk;ns ,oa cksy dk lekykspukRed v/;;u	d0 d0 oekZ
2-	Rkcyk oknu ds pryfo) ?kjkus ds fl)gLr mLrkn vgen tku fFkjdok dk Rkcyk oknu ds {ks= esa ;ksxnku	dYiuk 'kekZ

Ø0 l0	Yk?kq 'kk/k ÁcU/k	शोधार्थी
1-	fnYyh ,oa y[kuÅ ?kjkus ds dk;nksa dk rqyukRed v/;;u	'osrk 'kekZ
2-	Rkcys ds cukjl ?kjkus ds oknu esa dk;nk vkSj cksy का विश्ले"k.kkRed v/;;u	dq0 jtuh
3-	Lkaxhr ds {ks= esa mLrkn vgen tku fFkjdok th dk ;ksxnku	dYiuk 'kekZ
4-	vtjkMk ?kjkus ds lqÁfl) dykdkj mLrkn gchcqn~nhu [kka lkgc O;fDrRo ,oa ÑfrRo	सुयश शर्मा
5-	Rkcyk oknu ds {ks= esa egqeh [kka lkgc dk ;ksxnku	Ukhrw dqekjh

Ø0 l0	iqLrdsa ,oa if=dk;sa	Yks[kd@lEiknd
1-	तबला वादन की विस्तारशील बन्दिशें (पेशकार, कायदा एवं रेले के विशिष्ट सन्दर्भ में)	Tkequk Álkn iVsy
2-	कायदा और पेशकार	lk0 lR;ukjk;.k वशिष्ठ
3-	Lkaxhr ekfld if=dk uoEcj 2004	Mk0 y{eh ukjk;.k xxZ
4-	Lkaxhr dyk fogkj tuojh 2009	Mk0 ek/koh ukuy
5-	Lkaxhr dyk fogkj vxLr 2011	Mk0 ek/koh ukuy
6-	Lkaxhr dyk fogkj fnlEcj 2012	Mk0 ek/koh ukuy

उपर्युक्त वर्णित विवरणों व शोध छात्रा के संज्ञान में आये अब तक हुए शोध कार्यों को दृष्टिगत रखते हुए यह कहा जा सकता है कि शोध कार्यों में विभिन्न कलाकारों के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अनेक शोध कार्य हो चुके हैं। विभिन्न घरानों की विस्तारशील बन्दिशों पर भी शोधकार्य हो चुके हैं। साथ ही उ0 अहमद जान थिरकवा के तबला वादन के क्षेत्र में योगदान पर भी कार्य हुआ है किन्तु उनके वादन में प्रयुक्त कायदों के विषय में किसी भी कार्य की जानकारी प्राप्त नहीं होती। अस्तु थिरकवा जी के वादन में प्रयुक्त कायदों के विषय में जानकारी प्राप्त करने हेतु शोधकर्त्री द्वारा इस विषय को शोध के लिए चुना गया है।

fo"k; dFku %&

l|Áfl) rcyk oknd Loxh|; mLrkn vgen tku fFkjdok d| oknu e| Á;|Dr dk;n|&एक विश्लेषणात्मक अध्ययनA

leL;k dk Ákn|Hkk|o :–

उ0 अहमद जान थिरकवा के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं उनकी वादन शैली और संगीत के क्षेत्र में उनके योगदान पर तो शोधकार्य हो चुके हैं किन्तु इनके वादन में प्रयुक्त कायदों पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ है जो कि समस्या को उजागर करता है। उनके वादन में प्रयुक्त कायदों के विषय में जानकारी न होने से समस्या का प्रादुर्भाव होता है।

leL;k e| Á;|Dr 'kCnk| dh 0;k[;k %&

l|Áfl) (विश्लेषण] l|Kk½

मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश के अनुसार – खूब मशहूर, अति प्रसिद्ध।

rcyk ¼i|0½

yk|dHkkjrh Áekf.kd fgUnh **शब्दकोश** d| vu|lkj –ताल देने का एक प्रसिद्ध बाजा (इसमें दो बाजे एक साथ बजते हैं, जिसमें एक तबला और दूसरा बाँया कहलाता है)

ckkn ¼ifYyx] lKk½

मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश d vuqlkj – शास्त्रार्थ करने वाला, बोलने वाला, बजाने वाला, ढोल बजाने का एक खास ढंग।

oknu ¼ifYyx] lKk½

ykdHkkjrh Áekf.kd fgUnh **शब्दकोश** d vuqlkj – बाजा बजाना।

dk;nk ¼ifYyx] lKk½

ykdHkkjrh Áekf.kd fgUnh **शब्दकोश** d vuqlkj – विधि नियम, चाल दस्तूर, रीति ढंग, क्रम व्यवस्था।

विश्लेषणk ¼ifYyx] lKk½

cgr lkekrj **कोश** d vuqlkj – विच्छेदन, विलग्नन।

अध्ययन के उद्देश्य %&

- उ0 अहमद जान थिरकवा के जीवन परिचय का अध्ययन करना।
- उ0 अहमद जान थिरकवा के घराने एवं शैली का अध्ययन करना।
- उ0 अहमद जान थिरकवा के वादन वैशिष्ट्य का अध्ययन करना।
- उ0 अहमद जान थिरकवा के वादन में प्रयुक्त कायदों का विस्तार सहित अध्ययन करना।
- उ0 अहमद जान थिरकवा के कायदों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

ifjlhekdu %&

प्रस्तुत शोध कार्य समय व सीमा को ध्यान में रखते हुए उ0 अहमद जान थिरकवा के वादन में प्रयुक्त कायदे (25 कायदे) व उनके विश्लेषण तक ही सीमित रहेगा।

v/;;u dh fof/k :–

- साक्षात्कर, सर्वेक्षणात्मक, वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक विधि।

v/;;u ds midj.k %&

- दृश्य–श्रव्य सामग्री (कम्पयूटर, इंटरनेट, टेपरिकॉर्डर, लेपटॉप, मोबाइल)

v/;;u ds L=ksr :–

पुस्तकालय, पत्र–पत्रिकाओं तथा कलाकारों से साक्षात्कार द्वारा।

v/;k;ksa dk foHkktu :–

भूमिका

çFke v/;k;%&

उ0 अहमद जान थिरकवा : एक परिचय।

f}rh; v/;k;%&

उ0 अहमद जान थिरकवा : घराना एवं शैली।

r`rh; v/;k;%&

उ0 अहमद जान थिरकवा : वादन वैशिष्ट्य।

prqFkZ v/;k; %&

उ0 अहमद जान थिरकवा की वादन में प्रयुक्त कायदे %&

- कायदा : व्याख्या एवं महत्व।
- कायदे एवं उनका विस्तार सहित लेखन।

iape v/;k; %&

उ0 अहमद जान थिरकवा के कायदों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।

milagkj

'kks/k dk egRo %&

शोधार्थिनी द्वारा किया जा रहा यह कार्य महत्वपूर्ण है क्योंकि इस शोध कार्य के माध्यम से न केवल तबला वादन के विद्यार्थियों को बल्कि सम्पूर्ण संगीत जगत को भी उ0 अहमद जान

थिरकवा द्वारा बजाये गये पारम्परिक एवं घरानेदार कायदे सविस्तार प्राप्त हो सकेंगे। साथ ही थिरकवा जी द्वारा बजाये गये अन्य वादन प्रकारों पर कार्य करने के मार्ग भी प्रशस्त होंगे।

lUnHk xUFk lph

iLrd

Ø0 l0	Yk[kd dk uke	iLrd dk uke	प्रकाशक व प्रकाशन o"k
1-	iVy teuk Álkn	Rkcyk oknu dh विस्तारशील रचनाएँ	कनिष्क पब्लिशर्स fMLVhC;Vl
2-	वशिष्ठ सत्यनारायण	कायदा और पेशकार	Lkxhr dk;ky; gkFkjl
3-	feL=h vkcku b0	lk[kkot vkj rcyk d ?kjku ,o ijEijk;	i0 ddh0 ,l0 ftftuk Loj lk/kuk lfefr eEcb] f}rh; lLdj.k 2000
4-	0khj jkevorkj	Hkkjrh; lxhr dk bfrgkl Hkkx&2	राधा पब्लिकेशन दिल्ली, lLdj.k 1996
5-	^cece* egUn Álkn 'kek	vou) ok|&fl)kUr ,o oknu ijEijk	अभिषेक पब्लिकेशन्स, ÁFke lLdj.k 2008
6-	JhokLro गिरीश्चन्द्र	ताल कोश	रूबी प्रकाशन, प्रथम lLdj.k 1996
7-	Hkkxo vtuk	Hkkjrh; lxhr 'kkL=k e ok|k dk fpUru	dfu"d पब्लिशर्स, fMLVhC;Vl lLdj.k&ÁFke 2002
8-	0kfurk o.k	Rkcyk xUFk etl"kk	कनिष्क पब्लिशर्स, fMLVhC;Vl lLdj.k&ÁFke 2004

lf=dk;a

Ø0 l0	lEiknd dk uke	lf=dk dk uke	प्रकाशक व प्रकाशन o"k
1-	xxu y{eh ukjk;.k	Lkkxhr if=dk] uoEcj 2004	Lkkxhr dk;ky;] gkFkjl
2-	Ukkuy ek/koh	Lkkxhr dyk fogkj tuojh 2009	fejt
3-	Ukkuy ek/koh	Lkkxhr dyk fogkj vxLr 2011	fejt
4-	Ukkuy ek/koh	Lkkxhr dyk fogkj fnlEcj 2012	fejt
5-	Ukkuy ek/koh	Lkkxhr dyk fogkj tuojh 2013	fejt

कोश ग्रन्थ

Ø0 l0	Ykss[kd dk uke	कोश का नाम	प्रकाशक व प्रकाशन o"k
1-	शर्मा jkepUnz	ykdHkkjrh Áekf.kd हिन्दीकोश	लोकभारती प्रकाशन, rrh; laLdj.k 1996
2-	dekj dqlqe	बृहत् सामांतर कोश	नेश्नल बुक ट्रस्ट, ÁFke laLdj.k 2013
3-	nhf{kr Ñ".k dkUr	मानक विशाल हिन्दी शब्दकोश	कमल प्रकाशन